



Mr.vedant

10 Apr 2007

12:55 PM

Ahmedabad

Model: Web-MyKundli

Order No: 120762801

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 10/04/2007
दिन _____: मंगलवार
जन्म समय _____: 12:55:00 घंटे
इष्ट _____: 16:17:08 घटी
स्थान _____: Ahmedabad
राज्य _____: Gujarat
देश _____: India

अक्षांश _____: 23:03:00 उत्तर
रेखांश _____: 72:40:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:39:20 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 12:15:40 घंटे
वेलांतर _____: -00:01:27 घंटे
साम्पातिक काल _____: 01:28:16 घंटे
सूर्योदय _____: 06:24:08 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:57:50 घंटे
दिनमान _____: 12:33:42 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: वसन्त
सूर्य के अंश _____: 26:05:38 मीन
लग्न के अंश _____: 05:03:15 कर्क

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: कर्क - चन्द्र
राशि-स्वामी _____: धनु - गुरु
नक्षत्र-चरण _____: पूर्वाषाढ़ा - 3
नक्षत्र स्वामी _____: शुक
योग _____: शिव
करण _____: बालव
गण _____: मनुष्य
योनि _____: वानर
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: क्षत्रिय
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: मूषक
युँजा _____: अन्त्य
हंसक _____: अग्नि
जन्म नामाक्षर _____: फा-फारुख
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: स्वर्ण - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: मेष

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1929	चैत्र	20
पंजाबी	संवत : 2063	चैत्र	28
बंगाली	सन् : 1413	चैत्र	26
तमिल	संवत : 2063	पंगुनी	27
केरल	कोल्लम : 1182	मीनम	27
नेपाली	संवत : 2063	चैत्र	27
चैत्रादि	संवत : 2064	वैशाख	कृष्ण 7
कार्तिकादि	संवत : 2064	चैत्र	कृष्ण 7

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 7
तिथि समाप्ति काल _____ : 11:32:48
जन्म तिथि _____ : 8
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : पूर्वाषाढ़ा
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 23:49:16 घंटे
जन्म योग _____ : पूर्वाषाढ़ा
सूर्योदय कालीन योग _____ : परिघ
योग समाप्ति काल _____ : 06:47:10 घंटे
जन्म योग _____ : शिव
सूर्योदय कालीन करण _____ : बव
करण समाप्ति काल _____ : 11:32:48 घंटे
जन्म करण _____ : बालव
भयात _____ : 34:52:36
भभोग _____ : 62:08:15
भोग्य दशा काल _____ : शुक्र 8 वर्ष 10 मा 2 दि

घात चक्र

मास _____ : श्रावण
तिथि _____ : 3-8-13
दिन _____ : शुक्रवार
नक्षत्र _____ : भरणी
योग _____ : वज्र
करण _____ : तैत्तिल
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : मार्जार
लग्न _____ : धनु
सूर्य _____ : तुला
चन्द्र _____ : मीन
मंगल _____ : वृश्चिक
बुध _____ : सिंह
गुरु _____ : धनु
शुक्र _____ : कुम्भ
शनि _____ : कन्या
राहु _____ : कुम्भ

Shree Ram Krushna I Healing by Monalie soni

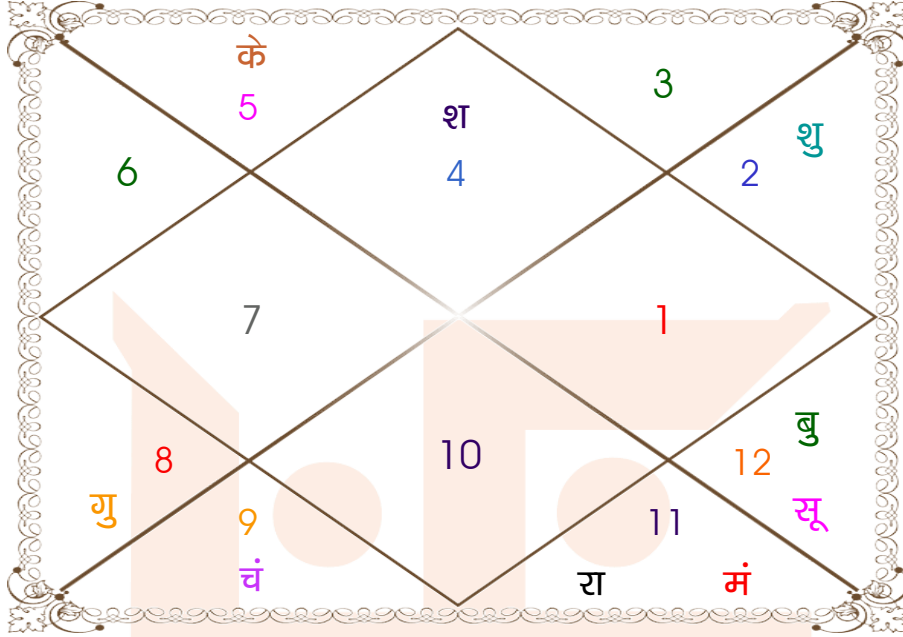
Cg road, Ahmedabad, Gujrat

9327559725

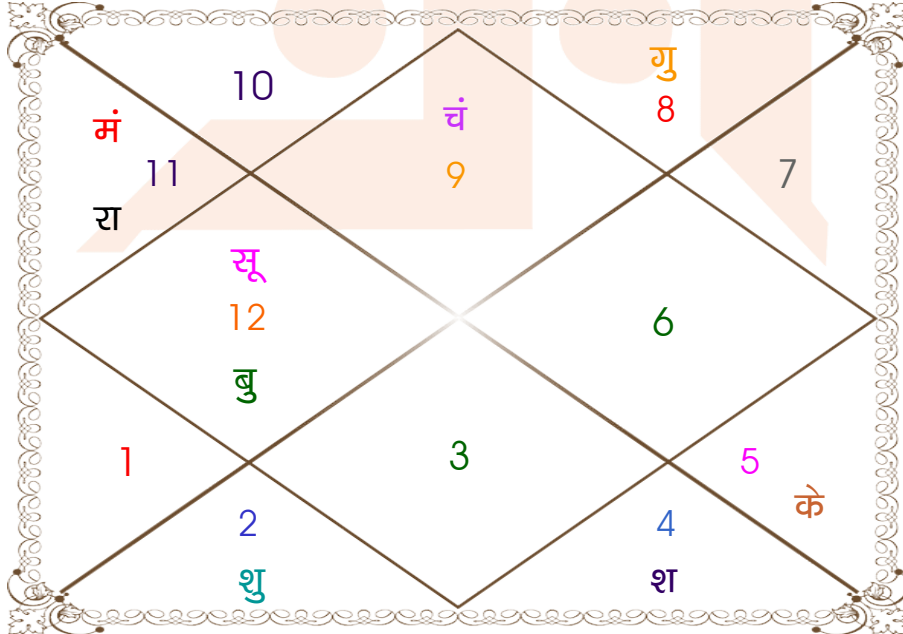
monaliesoni55@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली



चन्द्र कुंडली



Shree Ram Krushna I Healing by Monalie soni

Cg road, Ahmedabad, Gujrat

9327559725

monaliesoni55@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

बु सू		शु	
रा मं			श ल
			के
चं	गु		

लग्न कुंडली

शु		बु सू	रा मं
श ल			
के			चं
		गु	

विंशोत्तरी
शुक्र 8वर्ष 10मा 2दि
शुक्र

10/04/2007

12/02/2116

शुक्र	11/02/2016
सूर्य	10/02/2022
चन्द्र	11/02/2032
मंगल	11/02/2039
राहु	10/02/2057
गुरु	10/02/2073
शनि	11/02/2092
बुध	11/02/2109
केतु	12/02/2116

योगिनी
सिद्धा 3वर्ष 1मा 3दि
भामरी

14/05/2024

14/05/2028

भामरी	23/10/2024
भद्रिका	14/05/2025
उल्का	12/01/2026
सिद्धा	24/10/2026
संकटा	13/09/2027
मंगला	24/10/2027
पिंगला	13/01/2028
धान्या	14/05/2028

Shree Ram Krushna I Healing by Monalie soni

Cg road, Ahmedabad, Gujrat

9327559725

monaliesoni55@gmail.com

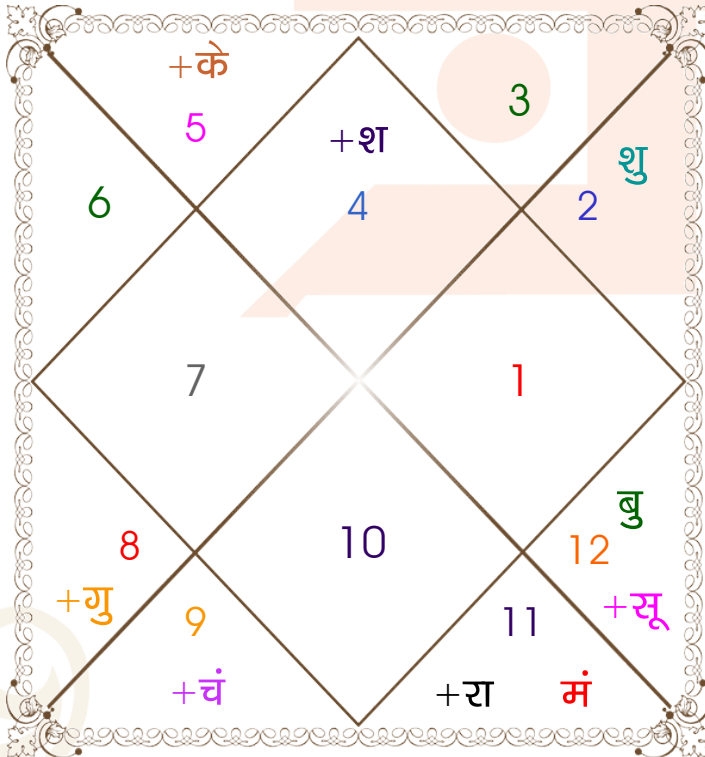
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कर्क	05:03:15	315:21:42	पुष्य	1	8	चंद्र	शनि	शनि	---
सूर्य			मीन	26:05:38	00:58:55	रेवती	3	27	गुरु	बुध	राहु	मित्र राशि
चंद्र			धनु	20:46:23	12:53:36	पूर्वाषाढा	3	20	गुरु	शुक्र	गुरु	सम राशि
मंगल			कुंभ	09:03:53	00:46:03	शतभिषा	1	24	शनि	राहु	गुरु	सम राशि
बुध			मीन	04:59:04	01:36:19	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	शनि	नीच राशि
गुरु	व		वृश्चि	25:47:27	00:00:48	ज्येष्ठा	3	18	मंगल	बुध	राहु	मित्र राशि
शुक्र			वृष	03:56:46	01:10:30	कृतिका	3	3	शुक्र	सूर्य	शनि	स्वराशि
शनि	व		कर्क	24:16:46	00:01:02	आश्लेषा	3	9	चंद्र	बुध	राहु	शत्रु राशि
राहु			कुंभ	21:35:55	00:00:09	पू०भाद्रपद	1	25	शनि	गुरु	गुरु	मित्र राशि
केतु			सिंह	21:35:55	00:00:09	पू०फाल्गुनी	3	11	सूर्य	शुक्र	गुरु	शत्रु राशि
हर्ष			कुंभ	22:40:42	00:03:00	पू०भाद्रपद	1	25	शनि	गुरु	शनि	---
नेप			मक	27:32:14	00:01:24	धनिष्ठा	2	23	शनि	मंगल	गुरु	---
प्लूटो	व		धनु	04:59:03	00:00:18	मूल	2	19	गुरु	केतु	मंगल	---
दशम भाव			मीन	29:52:53	--	रेवती	--	27	गुरु	बुध	शनि	--

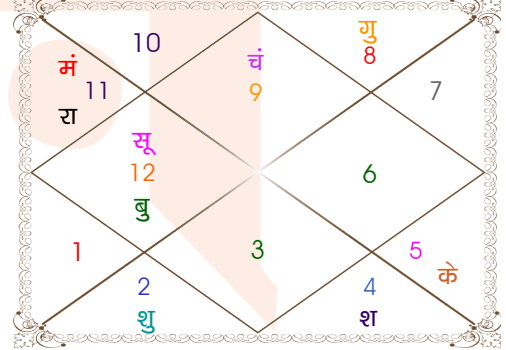
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:57:35

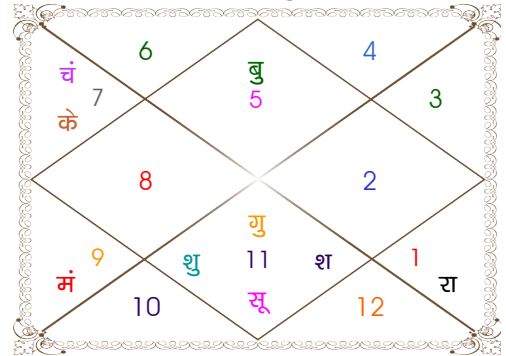
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



Shree Ram Krushna I Healing by Monalie soni

Cg road, Ahmedabad, Gujrat

9327559725

monaliesoni55@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मिथुन 19:11:31	कर्क 05:03:15
2	कर्क 19:11:31	सिंह 03:19:48
3	सिंह 17:28:04	कन्या 01:36:20
4	कन्या 15:44:36	कन्या 29:52:53
5	तुला 15:44:36	वृश्चिक 01:36:20
6	वृश्चिक 17:28:04	धनु 03:19:48
7	धनु 19:11:31	मकर 05:03:15
8	मकर 19:11:31	कुम्भ 03:19:48
9	कुम्भ 17:28:04	मीन 01:36:20
10	मीन 15:44:36	मीन 29:52:53
11	मेष 15:44:36	वृष 01:36:20
12	वृष 17:28:04	मिथुन 03:19:48

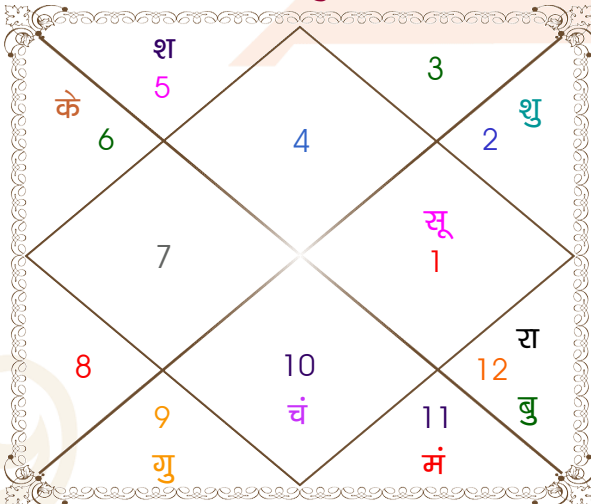
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कर्क	05:03:15
2	कर्क	29:44:01
3	सिंह	27:54:16
4	कन्या	29:52:53
5	वृश्चिक	03:17:23
6	धनु	05:15:57
7	मकर	05:03:15
8	मकर	29:44:01
9	कुम्भ	27:54:16
10	मीन	29:52:53
11	वृष	03:17:23
12	मिथुन	05:15:57

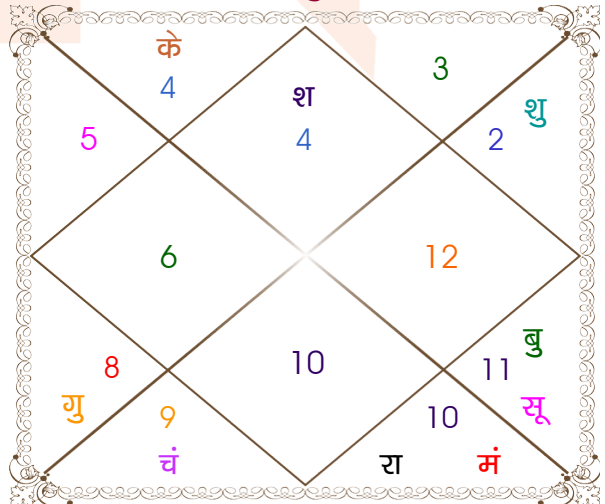
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल

चलित कुंडली



भाव कुंडली



Shree Ram Krushna I Healing by Monalie soni

Cg road, Ahmedabad, Gujrat

9327559725

monaliesoni55@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 8 वर्ष 10 मास 2 दिन

शुक्र 20 वर्ष 10/04/2007 11/02/2016	सूर्य 6 वर्ष 11/02/2016 10/02/2022	चंद्र 10 वर्ष 10/02/2022 11/02/2032	मंगल 7 वर्ष 11/02/2032 11/02/2039	राहु 18 वर्ष 11/02/2039 10/02/2057
00/00/0000	सूर्य 31/05/2016	चंद्र 12/12/2022	मंगल 09/07/2032	राहु 24/10/2041
00/00/0000	चंद्र 29/11/2016	मंगल 13/07/2023	राहु 28/07/2033	गुरु 19/03/2044
00/00/0000	मंगल 06/04/2017	राहु 11/01/2025	गुरु 04/07/2034	शनि 23/01/2047
00/00/0000	राहु 01/03/2018	गुरु 13/05/2026	शनि 12/08/2035	बुध 12/08/2049
10/04/2007	गुरु 18/12/2018	शनि 12/12/2027	बुध 09/08/2036	केतु 30/08/2050
गुरु 11/12/2008	शनि 30/11/2019	बुध 13/05/2029	केतु 05/01/2037	शुक्र 30/08/2053
शनि 11/02/2012	बुध 05/10/2020	केतु 12/12/2029	शुक्र 07/03/2038	सूर्य 25/07/2054
बुध 12/12/2014	केतु 10/02/2021	शुक्र 12/08/2031	सूर्य 13/07/2038	चंद्र 24/01/2056
केतु 11/02/2016	शुक्र 10/02/2022	सूर्य 11/02/2032	चंद्र 11/02/2039	मंगल 10/02/2057
गुरु 16 वर्ष 10/02/2057 10/02/2073	शनि 19 वर्ष 10/02/2073 11/02/2092	बुध 17 वर्ष 11/02/2092 11/02/2109	केतु 7 वर्ष 11/02/2109 12/02/2116	शुक्र 20 वर्ष 12/02/2116 00/00/0000
गुरु 31/03/2059	शनि 14/02/2076	बुध 10/07/2094	केतु 10/07/2109	शुक्र 13/06/2119
शनि 12/10/2061	बुध 24/10/2078	केतु 07/07/2095	शुक्र 10/09/2110	सूर्य 13/06/2120
बुध 18/01/2064	केतु 03/12/2079	शुक्र 07/05/2098	सूर्य 15/01/2111	चंद्र 11/02/2122
केतु 24/12/2064	शुक्र 02/02/2083	सूर्य 13/03/2099	चंद्र 16/08/2111	मंगल 14/04/2123
शुक्र 25/08/2067	सूर्य 15/01/2084	चंद्र 13/08/2100	मंगल 13/01/2112	राहु 13/04/2126
सूर्य 12/06/2068	चंद्र 15/08/2085	मंगल 10/08/2101	राहु 30/01/2113	गुरु 11/04/2127
चंद्र 12/10/2069	मंगल 24/09/2086	राहु 27/02/2104	गुरु 06/01/2114	00/00/0000
मंगल 18/09/2070	राहु 31/07/2089	गुरु 04/06/2106	शनि 15/02/2115	00/00/0000
राहु 10/02/2073	गुरु 11/02/2092	शनि 11/02/2109	बुध 12/02/2116	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशों के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शुक्र 8 वर्ष 9 मा 9 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Shree Ram Krushna I Healing by Monalie soni

Cg road, Ahmedabad, Gujrat

9327559725

monaliesoni55@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - गुरु	चंद्र - शनि	चंद्र - बुध	चंद्र - केतु	चंद्र - शुक्र
11/01/2025	13/05/2026	12/12/2027	13/05/2029	12/12/2029
13/05/2026	12/12/2027	13/05/2029	12/12/2029	12/08/2031
गुरु 17/03/2025	शनि 12/08/2026	बुध 23/02/2028	केतु 25/05/2029	शुक्र 23/03/2030
शनि 02/06/2025	बुध 02/11/2026	केतु 25/03/2028	शुक्र 29/06/2029	सूर्य 23/04/2030
बुध 10/08/2025	केतु 06/12/2026	शुक्र 19/06/2028	सूर्य 10/07/2029	चंद्र 12/06/2030
केतु 07/09/2025	शुक्र 12/03/2027	सूर्य 15/07/2028	चंद्र 28/07/2029	मंगल 18/07/2030
शुक्र 27/11/2025	सूर्य 10/04/2027	चंद्र 27/08/2028	मंगल 09/08/2029	राहु 17/10/2030
सूर्य 22/12/2025	चंद्र 29/05/2027	मंगल 26/09/2028	राहु 10/09/2029	गुरु 06/01/2031
चंद्र 31/01/2026	मंगल 01/07/2027	राहु 13/12/2028	गुरु 09/10/2029	शनि 13/04/2031
मंगल 01/03/2026	राहु 26/09/2027	गुरु 20/02/2029	शनि 11/11/2029	बुध 08/07/2031
राहु 13/05/2026	गुरु 12/12/2027	शनि 13/05/2029	बुध 12/12/2029	केतु 12/08/2031
चंद्र - सूर्य	मंगल - मंगल	मंगल - राहु	मंगल - गुरु	मंगल - शनि
12/08/2031	11/02/2032	09/07/2032	28/07/2033	04/07/2034
11/02/2032	09/07/2032	28/07/2033	04/07/2034	12/08/2035
सूर्य 21/08/2031	मंगल 20/02/2032	राहु 05/09/2032	गुरु 11/09/2033	शनि 06/09/2034
चंद्र 06/09/2031	राहु 13/03/2032	गुरु 26/10/2032	शनि 04/11/2033	बुध 02/11/2034
मंगल 16/09/2031	गुरु 02/04/2032	शनि 26/12/2032	बुध 22/12/2033	केतु 26/11/2034
राहु 14/10/2031	शनि 26/04/2032	बुध 18/02/2033	केतु 11/01/2034	शुक्र 01/02/2035
गुरु 07/11/2031	बुध 17/05/2032	केतु 12/03/2033	शुक्र 09/03/2034	सूर्य 21/02/2035
शनि 06/12/2031	केतु 25/05/2032	शुक्र 15/05/2033	सूर्य 26/03/2034	चंद्र 27/03/2035
बुध 01/01/2032	शुक्र 19/06/2032	सूर्य 03/06/2033	चंद्र 24/04/2034	मंगल 20/04/2035
केतु 12/01/2032	सूर्य 27/06/2032	चंद्र 05/07/2033	मंगल 13/05/2034	राहु 19/06/2035
शुक्र 11/02/2032	चंद्र 09/07/2032	मंगल 28/07/2033	राहु 04/07/2034	गुरु 12/08/2035
मंगल - बुध	मंगल - केतु	मंगल - शुक्र	मंगल - सूर्य	मंगल - चंद्र
12/08/2035	09/08/2036	05/01/2037	07/03/2038	13/07/2038
09/08/2036	05/01/2037	07/03/2038	13/07/2038	11/02/2039
बुध 03/10/2035	केतु 17/08/2036	शुक्र 17/03/2037	सूर्य 13/03/2038	चंद्र 30/07/2038
केतु 24/10/2035	शुक्र 11/09/2036	सूर्य 07/04/2037	चंद्र 24/03/2038	मंगल 12/08/2038
शुक्र 23/12/2035	सूर्य 19/09/2036	चंद्र 13/05/2037	मंगल 31/03/2038	राहु 13/09/2038
सूर्य 10/01/2036	चंद्र 01/10/2036	मंगल 06/06/2037	राहु 20/04/2038	गुरु 11/10/2038
चंद्र 09/02/2036	मंगल 10/10/2036	राहु 09/08/2037	गुरु 07/05/2038	शनि 14/11/2038
मंगल 02/03/2036	राहु 01/11/2036	गुरु 05/10/2037	शनि 27/05/2038	बुध 14/12/2038
राहु 25/04/2036	गुरु 21/11/2036	शनि 12/12/2037	बुध 14/06/2038	केतु 27/12/2038
गुरु 12/06/2036	शनि 15/12/2036	बुध 10/02/2038	केतु 21/06/2038	शुक्र 31/01/2039
शनि 09/08/2036	बुध 05/01/2037	केतु 07/03/2038	शुक्र 13/07/2038	सूर्य 11/02/2039

Shree Ram Krushna I Healing by Monalie soni

Cg road, Ahmedabad, Gujrat

9327559725

monaliesoni55@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

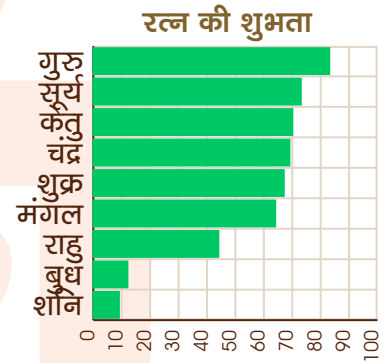
मूलांक	1
भाग्यांक	5
मित्र अंक	1, 4, 8, 9, 5
शत्रु अंक	3, 6
शुभ वर्ष	19,28,37,46,55
शुभ दिन	मंगल, सोम, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, चन्द्र, गुरु
मित्र राशि	मीन, सिंह
मित्र लग्न	तुला, मीन, वृष
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	मोती
शुभ उपरत्न	चन्द्रमणि
भाग्य रत्न	पुखराज
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	श्वेत
शुभ दिशा	पश्चिमोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	शंख, कपूर, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दही

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	83%	सन्तति सुख, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
माणिक्य	सूर्य	73%	भाग्योदय, धन
लहसुनिया	केतु	70%	धन, भाग्योदय
मोती	चंद्र	69%	शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य
हीरा	शुक्र	67%	धनार्जन, सुख
मूंगा	मंगल	64%	दुर्घटना से बचाव, व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख
गोमेद	राहु	44%	दुर्घटना, रोग
पन्ना	बुध	12%	नेष्ट भाग्य, व्यय, पराक्रम हानि
नीलम	शनि	9%	रोग, दाम्पत्य कष्ट, दुर्घटना



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शुक्र	11/02/2016	61%	56%	64%	25%	83%	79%	22%	53%	77%
सूर्य	10/02/2022	86%	75%	70%	12%	89%	54%	0%	19%	58%
चंद्र	11/02/2032	80%	81%	64%	25%	83%	67%	9%	19%	58%
मंगल	11/02/2039	80%	75%	77%	0%	89%	67%	9%	19%	77%
राहु	10/02/2057	61%	56%	52%	12%	83%	73%	22%	59%	58%
गुरु	10/02/2073	80%	75%	70%	0%	95%	54%	9%	44%	70%
शनि	11/02/2092	61%	56%	52%	25%	83%	73%	34%	53%	58%
बुध	11/02/2109	80%	56%	64%	38%	83%	73%	9%	44%	70%
केतु	12/02/2116	61%	56%	70%	12%	83%	73%	0%	19%	83%

Shree Ram Krushna I Healing by Monalie soni

Cg road, Ahmedabad, Gujrat

9327559725

monaliesoni55@gmail.com

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	10/04/2007-16/07/2007	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	26/01/2017-21/06/2017 26/10/2017-24/01/2020	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	24/01/2020-29/04/2022 12/07/2022-17/01/2023	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/03/2025-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028	-----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049 10/07/2049-04/12/2049	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	06/03/2049-10/07/2049 04/12/2049-25/02/2052	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	14/05/2054-02/09/2054 05/02/2055-07/04/2057	-----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064 09/05/2064-13/10/2065 03/02/2066-03/07/2066	
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	05/02/2073-31/03/2073 23/10/2073-16/01/2076 11/07/2076-11/10/2076	
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	16/01/2076-11/07/2076 11/10/2076-15/01/2079	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	15/01/2079-12/04/2081 03/08/2081-07/01/2082	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	20/03/2084-21/05/2086 21/05/2086-08/02/2087	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

फल

अशुभ
सम
शुभ
शुभ
शुभ

क्षेत्र

बुरा स्वास्थ्य
सन्तति कष्ट
शत्रु व रोग
दम्पति
भाग्योदय

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।

स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म समय में मंगल जन्म कुंडली में अष्टम भाव में स्थित है अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं। परन्तु आपकी कुण्डली में शास्त्रानुसार मंगली दोष समाप्त हो जाता है अतः आपको इसके अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त होंगे। इससे आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बिना किसी विघ्न बाधाओं के समाप्त होंगे। यदा कदा अल्प मात्रा में पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित होगा लेकिन किसी भी प्रकार से कोई हानि नहीं होगी। साथ ही इसके शुभ प्रभाव से आप उत्तम शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे एवं भाई बहनों का भी पूर्ण सुख प्राप्त करने में सफल रहेंगे तथा अपना सम्पूर्ण जीवन सुख सौभाग्य एवं ऐश्वर्य से युक्त होकर व्यतीत करेंगे।

यद्यपि यह मंगल आपके लिए शुभ होगा परन्तु इसके प्रभाव से विवाह में थोड़ा विलम्ब हो सकता है। विवाह अत्यन्त ही सुखद वातावरण में सम्पन्न होगा तथा इसमें आपको किसी भी प्रकार की अनावश्यक समस्याओं एवं विघ्नों का सामना नहीं करना पड़ेगा। शादी के पश्चात भी जीवन सुखी रहेगा लेकिन यदा कदा इससे पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित होगा परन्तु आपके सभी कार्य व्यवधान रहित सम्पन्न होते रहेंगे। आप जीवन में पूर्ण सुख तथा आनन्द की अनुभूति करेंगे।

आपकी कुण्डली में मंगल अष्टम भाव में स्थित है अतः आपके सभी सांसारिक व्यापारिक तथा परिवारिक कार्य प्रायः निर्विघ्न रूप से समाप्त होंगे। अपने सभी कार्यों में आप सफलता प्राप्त करते रहेंगे। कभी कभी पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि से आपके लाभमार्ग हमेशा प्रशस्त रहेंगे तथा जीवन में आर्थिक रूप से प्रायः सुदृढ़ रहेंगे। साथ ही धनैश्वर्य से भी सुसम्पन्न रहेंगे। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि होने से आप उच्च शिक्षा को प्राप्त करने में सफल रहेंगे। तथापि यदा कदा कार्य में बाधाएं उपस्थित

होंगी परन्तु आप उसे दूर करने में सफल होंगे। साथ ही आपका पारिवारिक जीवन भी सुख एवं शान्ति से परिपूर्ण रहेगा। तृतीय भाव पर भी मंगल की दृष्टि होने से आप भाई बहनों से युक्त रहेंगे एवं जीवन में उनसे भी पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में सौभाग्यशाली सिद्ध होंगे। मंगल के इस शुभ प्रभाव से आपका जीवन सुखद एवं आनन्द पूर्वक व्यतीत होगा।

अपने दाम्पत्य जीवन को और अधिक सुखमय एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी ऐसी गैरमांगलिक या मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिसका उचित नियमानुसार मांगलिक दोष समाप्त हो रहा हो। इस प्रकार यदि आप विवाह करेंगे तो आपका दाम्पत्य जीवन अत्यन्त ही सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा। सभी प्रकार से आप जीवन में पूर्ण सौभाग्य, धनैश्वर्य एवं मान सम्मान प्राप्त करके समाज में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति के रूप में यश अर्जित करेंगे।

इसके अतिरिक्त जन्म पत्री मिलान के समय अष्टम भाव में ही यदि कन्या की जन्म कुण्डली में मंगल स्थित हो तो इसकी यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए क्योंकि समान भावों में मंगल होने से आपके जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अनावश्यक व्यवधान उत्पन्न होंगे तथा पत्नी का स्वास्थ्य भी खराब रहेगा। अन्य भावों में स्थित मंगल शुभ प्रभावों में वृद्धि करेगा तथा आपका दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा। अतः सावधानी पूर्वक सोच विचार कर अन्तिम निर्णय लेना चाहिए जिससे जीवन में किसी भी प्रकार से अशान्ति या कष्ट उत्पन्न न हो सके।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।
- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर शनि का प्रभाव है ।

आपकी कुंडली में मंगल के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुंडली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए ।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों ।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



ग्रह फल

सूर्य

नवमभाव में सूर्य होतो जातक साहसी, ज्योतिषी, नेता सदाचारी, तपस्वीयोगी, वाहनसुख, भृत्यसुख एवं पिता के लिए अशुभ होता है।

मीन राशि में रवि हो तो जातक बुद्धिमान्, यशस्वी, व्यापारी, विवेकी ज्ञानी, योगी, प्रेमी, गुप्त विद्याओं में रुचि रखने वाला और स्वसुर से लाभन्वित होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य नवम भाव में स्थित है अतः आप पिता के स्नेह पात्र होंगे। उनका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। जीवन में धन सम्पत्ति से सर्वदा युक्त रहेंगे एवं समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आपके भाग्योदय संबंधी कार्यों में भी उनकी आपके लिए पूर्ण प्रेरणा तथा सहयोग का भाव रहेगा।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगे एवं उनकी आज्ञा पालन तथा सेवा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद उत्पन्न होने के कारण इनमें अल्प मात्रा में तनाव या कटुता का समावेश का आभास होगा जो कुछ समयोपरान्त स्वतः ही समाप्त हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी हार्दिक सहायता करेंगे एवं सुख दुःख में उनको पूर्ण वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।

चन्द्र

षष्ठभाव में चन्द्रमा हो तो जातक अल्पायु, आसक्त, कफरोगी, खर्चीले स्वभाववाला, नेत्ररोगी एवं भृत्यप्रिय होता है।

धनु राशि में चन्द्रमा हो तो जातक वक्त, सुन्दर, शिल्पज्ञ, शत्रुविनाशक उच्च बौद्धिक स्तर वाला, सुखी विवाहित जीवन, विरासत में धन सम्पत्ति पाने वाला, साहित्य के प्रति रुचि का दिखावा करने वाला एवं लेखक होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठ भाव में स्थित है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। परन्तु समय समय पर उन्हें शारीरिक परेशानी होती रहेगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको पूर्ण सहायता प्रदान करेंगी। साथ ही आपके कार्यों के व्यवधान आदि को भी दूर करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी एवं आपकी सफलता की हमेशा इच्छुक रहेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धावान रहेंगे एवं आजीवन उनकी सेवा के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही समय समय पर उनको अपनी ओर से वांछित सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगे। आपके संबंध मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद होंगे जिससे कभी कभी अप्रिय स्थिति उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय उपरान्त सब कुछ ठीक हो जाएगा।

मंगल

आठवेंभाव में मंगल हो तो जातक व्याधिस्त, व्यसनी, मद्यपायी, कठोरभाषी, उन्मत्त, नेत्ररोगी, शस्त्रचोर, संकोची, अग्निभीरु, धनचिन्ता युक्त एवं रक्तविकारयुक्त होता है।

कुम्भ राशि में मंगल हो तो जातक व्यसनी, लोभी, सटटे से धननाशक, आचारहीन, मत्सरवृत्ति एवं बुद्धिहीन होता है।

आपके जन्म समय में मंगल अष्टम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव भी विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे प्रायः युक्त रहेंगे एवं यथाशक्ति जीवन में आपको अपना सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे। साथ ही यदा कदा आप उनसे विशेष रूप से आर्थिक सहयोग भी प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी वे आपका साथ देंगे तथा अपनी ओर से कोई भी कष्ट नहीं होने देंगे।

आप भी उनको हार्दिक सम्मान प्रदान करेंगे तथा उनकी सहायता करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आप के आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह तनाव अस्थायी रहेगा एवं शीघ्र ही समाप्त हो जाएगा। जीवन में आप सभी विषम परिस्थितियों में सर्वदा उनकी अपनी ओर से वांछित सहायता प्रदान करते रहेंगे।

बुध

नवमभाव में बुध हो तो जातक विद्वान् लेखक, ज्योतिषी, धर्मभीरु, व्यवसाय प्रिय, भाग्यवान्, सम्पादक, गवैया, कवि एवं सदाचारी होता है।

मीन राशि में बुध हो तो जातक स्वाभिमानी, सदाचारी, सहनशील, भाग्यवान्, प्रवास में सुखी, मिष्टभाषी, कार्यदक्ष, धनसंही, नकल करने का स्वभाव, चिन्तित एवं छोटे दिल का होता है।

गुरु

पंचमभाव में गुरु हो तो जातक नीतिविशारद, सन्ततिवान्, सटटे से धन प्राप्त करने वाला, कुलश्रेष्ठ, लोकप्रिय, कुटुम्ब में सबसे ऊँचा स्थान, ज्योतिषी एवं आस्तिक होता है।

वृश्चिक राशि में गुरु हो तो जातक शास्त्रज्ञ, राजमन्त्री, कार्यकुशल, सुगठित शरीर, अपनी उच्चता का दिखावा करने वाला, स्वार्थी, निर्बलस्वास्थ्य, दुःखी एवं कामुक होता है।

शुक्र

ग्यारहवें भाव में शुक्र हो तो जातक परोपकारी, लोकप्रिय, जौहरी, विलासी, वाहनसुखी, स्थिरलक्ष्मीवान्, धनवान् गुणज्ञ, कामी एवं पुत्रवान् होता है।

वृष राशि में शुक्र हो तो जातक सुन्दर, ऐश्वर्यवान्, दानी, सदाचारी, सात्त्विक, परोपकारी, अनेक शास्त्रज्ञ, दृढ़, स्वतन्त्रकामुक, शौकीन तबीयत, संगीत-नृत्य तथा अन्य कलाओं में रुचि एवं आलसी होता है।

शनि

लग्न (प्रथम) में शनि मकर, कुम्भ तथा तुला का हो तो धनाढ्य, सुखी, धनु और मीन राशियों में हो तो अत्यन्त धनवान् और सम्मानित एवं अन्य राशियों का हो तो अशुभ होता है।

कर्क राशि में शनि हो तो जातक, गरीब, कमसन्तान, बाल्यावस्था में दुखी, मातृरहित, प्राज्ञ, उन्नतिशील, विद्वान्, हठी एवं स्वार्थी होता है।

राहु

अष्टम भाव में राहु हो तो जातक क्रोधी, व्यर्थभाषी, मूर्ख, उदररोगी, कामी, पुष्टदेही एवं गुप्तरोगी होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

केतु

द्वितीय भाव में केतु हो तो जातक अस्वस्था, कटुवचन बोलने वाला, मुंह के रोग, राजभीरु एवं विद्रोही होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।

दशा विश्लेषण

**महादशा :- चन्द्र
(10/02/2022 - 11/02/2032)**

चन्द्र की महादशा की अवधि दस वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 10/02/2022 को आरम्भ और 11/02/2032 को समाप्त होगी।

चन्द्र षष्ठम भाव में अवस्थित है और षष्ठम भाव रोग, बीमारी, रोजगार अधीनस्थ कर्मचारियों या सेवकों, ऋण, शत्रुओं, मामा, कृपणता, तथा तीव्र व्यथा का प्रतिनिधित्व करता है। अतः दस वर्षों की यह अवधि औसत अवधि होगी और उदास, राहत, दुःख तथा समस्याओं की अवधि होगी और आप परिस्थिति के अनुसार इनके साथ समझौता करने का प्रयास करेंगे।

स्वास्थ्य :

आप किसी बड़े या छोटे रोग से ग्रसित नहीं होंगे, अपना सन्तुलन बनाए रहेंगे और समय सारणी के अनुसार और स्फूर्ति तथा सक्रियता के साथ अपने कार्यों का संपादन करेंगे। इस अवधि में आपका स्वास्थ्य और शक्ति सामान्य रहेगी और आप अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत करेंगे।

अर्थ और संपत्ति :

दस वर्ष की इस अवधि में आप के मामा आपकी बहुत सहायता करेंगे और उनकी सहायता के कारण आपकी संपत्ति में वृद्धि होगी और आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आप सुख-साधनों पर व्यय करेंगे और जीवन का भरपूर आनन्द उठाएंगे।

व्यवसाय :

आपका व्यावसायिक जीवन सुखी होगा। अगर नौकरी पेशा हैं तो जीवन में उन्नति के अनेक अवसर मिलेंगे और यदि व्यवसाय से जुड़े हैं तो नये व्यवसाय के अवसर मिलेंगे जिसमें आप सफल होंगे। घाटे के अवसर भी आ सकते हैं। आपके मामा आपकी आपकी समस्याओं के समय बहुत सहायता करेंगे। आपके मामा अपने जीवन में बहुत तरक्की करेंगे और आपके परिवार की सहायता करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपके जीवन साथी आपके सहायक व सहयोगी होंगे जिससे आपका पारिवारिक जीवन सौहार्द्रपूर्ण होगा। किन्तु विषादपूर्ण मुद्रा और स्वभाव के कारण कभी-कभी समस्याएं आ सकती हैं जिसके फलस्वरूप आपका दैनिक जीवन अव्यवस्थित हो सकता है।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

आप अपनी शिक्षा जारी रखेंगे और साहित्य अथवा ज्योतिष में रुचि हो सकती है।

अंतर्दशा :- चन्द्र - राहु
(13/07/2023 - 11/01/2025)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह महादशा 10/02/2022 को प्रारंभ हुई और 11/02/2032 को समाप्त होगी। चंद्र महादशा में राहु की अंतर्दशा की अवधि 18 मास रहेगी। आपके लिए यह 13/07/2023 को प्रारंभ होकर 11/01/2025 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्रिका के सप्तम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। राहु छाया ग्रह है जो अस्तित्वहीन है मगर ग्रहों के समान प्रभावशाली है। इसका शुभत्व इसके निवास और युत ग्रह के अनुसार होता है।

इस अवधि में आपको बहुत सावधान रहना चाहिए क्योंकि समाज में अपमान हो सकता है। कोई व्याधि हो सकती है। झगड़े विवाद से बचें। समय कठिन हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए राहु के गायत्री मंत्र का जाप करें।

अरिष्ट से बचाव के लिए 7 रत्ती का गोमेद चांदी की अंगूठी में, कच्चे दूध या गंगाजल से धोकर, अपने इष्टदेव का ध्यान करते हुए, बायें हाथ की मध्यमा उंगली में रात्रि भोजन के बाद धारण करें।

अंतर्दशा :- चन्द्र - गुरु
(11/01/2025 - 13/05/2026)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 10/02/2022 को प्रारंभ हुई। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 16 मास है। यह आपके लिए 11/01/2025 को प्रारंभ होकर 13/05/2026 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्रिका के पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। बृहस्पति शुभग्रह है। पंचम भाव में स्थित होकर गुरु आपकी कुंडली के 9, 11, और लग्न भावों पर अपनी दृष्टि डाल रहा है।

इस अवधि में आप विद्वान और बुद्धिमान होंगे। अपने उच्चाधिकारी के सलाहकार बन सकते हैं। भद्र लोगों से मित्रता होगी। वाहन सुख रहेगा। समाज में सम्मान बढ़ेगा। ईश्वर में आस्था में वृद्धि होगी। संतान आज्ञाकारी होगी, मित्र सम्मान करेंगे।

शुभत्व में वृद्धि के लिए गुरु के वैदिक मंत्र के 19,000 जाप करें।

अंतर्दशा :- चन्द्र - शनि
(13/05/2026 - 12/12/2027)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में शनि की अंतर्दशा 1 वर्ष 7 मास रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 10/02/2022 को प्रारंभ हुई और 11/02/2032 को समाप्त होगी। शनि अंतर्दशा 13/05/2026 को प्रारंभ होकर 12/12/2027 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्रिका के प्रथम भाव में स्थित है। प्रथम भाव शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है। लग्न में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 3,7,10 भावों पर अपनी दृष्टि डाल रहा है।

इस अवधि में आप अधार्मिक और परंपराविरुद्ध हो सकते हैं। स्वास्थ्य कमजोर हो सकता है। वातरोगों से बचाव करें। अधिकारी वर्ग अप्रसन्न हो सकता है। सत्ताच्युत हो सकते हैं।

हर कदम पर सावधानी की आवश्यकता है। अरिष्ट से बचाव के लिए सोने या चांदी में जड़ा हुआ नीली रत्न दाहिनी हाथ की मध्यमा उंगली में, शनिवार के दिन रात्रि भोजन के बाद, पूजा करने के बाद धारण करें। काले घोड़े की नाल का छल्ला भी दाहिने हाथ की मध्यमा उंगली में शनिवार की रात्रि में धारण करें।

अंतर्दशा :- चन्द्र - बुध
(12/12/2027 - 13/05/2029)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा 1 वर्ष 5 मास रहेगी।

आपके लिए चंद्र महादशा 10/02/2022 को प्रारंभ हुई थी और 11/02/2032 को समाप्त होगी। इसमें बुध की अंतर्दशा 12/12/2027 को प्रारंभ होकर 13/05/2029 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्रिका के नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। बुध नवम भाव में स्थित होकर कुंडली के तृतीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व पर प्रभावी हो रहा है। इस अवधि में आप ज्ञान और धन अर्जित करेंगे। आपका दृष्टिकोण वैज्ञानिक रहेगा। आप देश-विदेश में व्याख्यान दे सकते हैं। विदेश से आपके लिए आमंत्रण आ सकते हैं। पिता के साथ आपके संबंध मधुर रहेंगे।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

अंतर्दशा :- चन्द्र - केतु
(13/05/2029 - 12/12/2029)

चंद्रमा की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इसके अंतर्गत केतु अंतर्दशा 7 मास की रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 10/02/2022 को प्रारंभ हुई ओर 11/02/2032 को समाप्त होगी। केतु अंतर्दशा 13/05/2029 को प्रारंभ होकर 12/12/2029 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका के द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ-हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत और परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है।

इस अवधि में आपको अग्नि, चोरी, मुकदमे या जुए आदि से धनहानि हो सकती है, कर्ज चढ़ सकता है। नेत्ररोग या शरीर के दायें भाग में कोई कष्ट हो सकता है। अध्यात्म में रुचि बढ़ेगी।

अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करें :

1. श्वान को भोजन दें।
2. घर पर भूरा श्वान पालें।
3. गरीबों को मंदिर में कंबल बांटें।

अंतर्दशा :- चन्द्र - शुक्र
(12/12/2029 - 12/08/2031)

चंद्र की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 10/02/2022 को प्रारंभ होकर 11/02/2032 को समाप्त होगी।

इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 12/12/2029 को प्रारंभ होकर 12/08/2031 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्रिका के एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है।

इस अवधि में आपकी सैलानी प्रवृत्ति प्रबल रहेगी। इससे बहुत से मित्र बनेंगे और लोकप्रियता बढ़ेगी। विपरीत लिंग के व्यक्तियों से भी संबंध प्रगाढ़ होंगे। सुख-सुविधाएं भरपूर रहेंगी। धन का लाभ होगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करें :

1. चींटियों को शक्कर और आटा दें।
2. कन्याओं को खीर खिलाएं।
3. भोजन से पहली चपाती निकालकर गाय को दें।

4. लक्ष्मीजी की उपासना करें।



Shree Ram Krushna I Healing by Monalie soni

Cg road,Ahmedabad,Gujrat

9327559725

monaliesoni55@gmail.com